يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَقُولُوا۟ رَٰعِنَا وَقُولُوا۟ ٱنظُرْنَا وَٱسْمَعُوا۟ ۗ
وَلِلْكَـٰفِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ ١٠٤ مَّا يَوَدُّ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ مِنْ أَهْلِ
ٱلْكِتَـٰبِ وَلَا ٱلْمُشْرِكِينَ أَن يُنَزَّلَ عَلَيْكُم مِّنْ خَيْرٍ مِّن
رَّبِّكُمْ ۚ وَٱللَّهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِۦ مَن يَشَآءُ ۚ وَٱللَّهُ ذُو ٱلْفَضْلِ
ٱلْعَظِيمِ ١٠٥ ۞ مَا نَنسَخْ مِنْ ءَايَةٍ أَوْ نُنسِهَا نَأْتِ بِخَيْرٍ مِّنْهَآ
أَوْ مِثْلِهَآ ۗ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ ١٠٦ أَلَمْ تَعْلَمْ
أَنَّ ٱللَّهَ لَهُۥ مُلْكُ ٱلسَّمَـٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۗ وَمَا لَكُم مِّن دُونِ
ٱللَّهِ مِن وَلِىٍّ وَلَا نَصِيرٍ ١٠٧ أَمْ تُرِيدُونَ أَن تَسْـَٔلُوا۟ رَسُولَكُمْ
كَمَا سُئِلَ مُوسَىٰ مِن قَبْلُ ۗ وَمَن يَتَبَدَّلِ ٱلْكُفْرَ بِٱلْإِيمَـٰنِ
فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ ٱلسَّبِيلِ ١٠٨ وَدَّ كَثِيرٌ مِّنْ أَهْلِ ٱلْكِتَـٰبِ لَوْ
يَرُدُّونَكُم مِّنۢ بَعْدِ إِيمَـٰنِكُمْ كُفَّارًا حَسَدًا مِّنْ عِندِ
أَنفُسِهِم مِّنۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ ٱلْحَقُّ ۖ فَٱعْفُوا۟ وَٱصْفَحُوا۟ حَتَّىٰ
يَأْتِىَ ٱللَّهُ بِأَمْرِهِۦٓ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ ١٠٩ وَأَقِيمُوا۟
ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتُوا۟ ٱلزَّكَوٰةَ ۚ وَمَا تُقَدِّمُوا۟ لِأَنفُسِكُم مِّنْ خَيْرٍ
تَجِدُوهُ عِندَ ٱللَّهِ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ١١٠ وَقَالُوا۟ لَن
يَدْخُلَ ٱلْجَنَّةَ إِلَّا مَن كَانَ هُودًا أَوْ نَصَـٰرَىٰ ۗ تِلْكَ أَمَانِيُّهُمْ ۗ
قُلْ هَاتُوا۟ بُرْهَـٰنَكُمْ إِن كُنتُمْ صَـٰدِقِينَ ١١١ بَلَىٰ ۚ مَنْ أَسْلَمَ
وَجْهَهُۥ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهُۥٓ أَجْرُهُۥ عِندَ رَبِّهِۦ وَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ١١٢

Theme	
Etiquettes to address the Prophet of Allah. Abrogation and / or substitution of the verses of the Qur'an. Questioning the Prophet. Envy of Jews and Christians. Open-ended credit account for the Hereafter. The Jews' and Christians' false claim to inherit paradise.	अल्लाह के रसूल से ख़िताब के आदाब। क़ुरआन की आयात का नस्ख़ और/या उनकी जगह मुतबादिल का आना। नबी से नामुनासिब सवालात करना। यहूद व नसारा का हसद। आख़िरत के लिए खुला हुआ सवाब का खाता। यहूद व नसारा का जन्नत के वारिस होने का बातिल दावा।
Tarjumani	
O Believers, do not say to our Rasool: *Raina* (an ambiguous word for: "Listen, may you become deaf" or "Our shepherd" or in Judeo-Arabic language conveys the sense, "our evil one.") But say: "*Unzurna* ("look upon" us "or pay attention" to us) and listen to him carefully; and remember that there is a painful punishment for the unbelievers. The unbelievers among the People of the Book, and the *mushrikeen*, would never wish that any good be sent down to you, O Muhammad, from your	ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, 'राइना' न कहा करो, बल्कि 'उन्ज़ुरना' कहो और तवज्जुह से बात को सुनो, ये काफ़िर तो अज़ाबे-अलीम के मुस्तहिक हैं	ये लोग जिन्होंने दवाते-हक़ को कबूल करने से इनकार कर दिया है, खाह अहले-किताब में से हों या मुशरिक हों, हरगिज़ यह पसन्द नहीं करते कि तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम पर कोई भलाई नाज़िल हो, मगर अल्लाह जिसको चाहता है अपनी रहमत के लिए चुन लेता है, और वह बड़ा फज्ल फरमानेवाला है	हम अपनी जिस आयत को मंसूख कर देते हैं या भुला देते हैं, उसकी जगह उससे बेहतर लाते हैं. या कम-अज़-

Rabb, but Allah chooses for His special Mercy whom He pleases, and Allah is the most Gracious. We do not abrogate any of the verses of Al-Quran or cause it to be forgotten except that We substitute it with something better or similar, do you not know that Allah has full power over everything? Do you not know that to Allah belongs the dominion of the heavens and the earth, and that besides Allah, you have no protector or helper. Do you intend to ask your Rasool (Muhammad) questions as Musa (Moses) was asked before? But whoever barters belief for unbelief, has indeed lost the direction of the Right Way. Many among the people of the Book (Jews and Christians) wish they could somehow turn you back from belief to unbelief, due to their selfish envy, after the truth has become quite clear to them. Forgive them and bear with them until Allah brings about His decision; rest assured that	कम वैसी ही	क्या तुम जानते हो कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है? क्या तुम्हें ख़बर नहीं है कि ज़मीन और आसमानों की फारमाँरवाई अल्लाह ही के लिए है और उसके सिवा कोई तुम्हारी खबरगीरी करने और तुम्हारी मदद करनेवाला नहीं है? फिर क्या तुम अपने रसूल से उस क़िस्म के सवालात और मुतालाबे करना चाहते हो जैसे इससे पहले मूसा से किए जा चुके हैं? हालाँकि जिस शख्स ने ईमान की रविश को कुफ़्र की रविश से बदल लिया, वह राहे-रास्त से भटक गया	अहले-किताब से में अकसर लोग यह चाहते हैं कि किसी तरह तुम्हें ईमान से फेरकर फिर कुफ़्र की तरफ़ ले जाएँ, अगरचे हक़ उनपर ज़ाहिर हो चुका है, मगर अपने नफ्स के हसद की बिना पर तुम्हारे लिए उनकी यह ख़ाहिश है	इसके ज़वाब में तुम अफव व दरगुज़र से काम लो, यहाँ तक कि अल्लाह ख़ुद ही अपना फ़ैसला नाज़िल कर दे	मुत्मइन रहो कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है	नमाज़ कायम करो और ज़कात दो	तुम अपनी आक़िबत के लिए जो भलाई कमा कर आगे भेजोगे, अल्लाह के यहाँ उसे मौजूद

Allah has power over everything. Establish Salah (Prayers) and pay Zakah (obligatory charity), and whatever good you send ahead of you to the Hereafter for yourselves, you shall find it with Allah; surely, Allah is watching all your actions. They say: "None shall enter paradise except the one who is a Jew or a Christian." These are their vain desires. Say O Muhammad: "Let us have your proof if you are right in your claim. Yea! Whoever submits himself entirely to Allah and is a doer of good deeds, will be rewarded by his Rabb; and will have nothing to fear or to grieve.	पाओगे	जो कुछ तुम करते हो, वह सब अल्लाह की नज़र में है	उनका कहना है कि कोई शख्स जन्नत में न जाएगा जब तक कि वह यहूदी न हो या (ईसाइयों के ख़याल के मुताबिक़) ईसाई न हो	ये उनकी तमन्नाएं हैं	उनसे कहो, "अपनी दलील पेश करो, अगर तुम अपने दावे में सच्चे हो |" (दरअस्ल न तुम्हारी कुछ खुसूसियत है, न किसी और की) हक़ यह है कि जो भी अपनी हस्ती को अल्लाह की इताअत में सौंप दे और अमलन नेक रविश पर चले, उसके लिए उसके रब के पास उसका अज्र है और ऐसे लोगों के लिए किसी खौफ़ या रंज का कोई मौक़ा नहीं	
Tafsir	